हिन्दी भाषा में संक्षेपण का महत्व

डॉ.लविन्द्रसिंह रणजीतसिंह लबाना
जी.ऍम.डी.सी.कॉलेज,
नखत्राणा,कच्छ

"संक्षेपण" का शाब्दिक अर्थ संक्षिप्त या छोटा करना है . हिंदी में इस शब्द का प्रयोग अंगेजी के 'Precis writing' के अर्थ में किया जा रहा है . संक्षेपण के लिए संक्षेपीकरण सार, सार-संक्षेप, भाव संक्षेप आदि शब्दों का प्रयोग भी कर दिया जाता है . किसी लम्बे गद्यांश , अवतरण या विवरण का सार रूप अथवा संक्षेप में प्रस्तुत करना 'संक्षेपण' कहलाता है . संक्षेपण में किसी दिए गए अंस को इस प्रकार छोटा किया जाता है कि उसके सभी प्रमुख तथ्य,भाव या विचार मूल अंस के लगभग एक तिहाई शब्दों में आ जाते है. दुसरे शब्दों में संक्षेपण मूल अंस के लगभग एक तिहाई आकार का होता है और इसमें मूल अंस की प्रमुख बाते भी सार रूप में आ जाती है .

1. संक्षेपण का महत्व

भाषा के व्यवहार में संक्षेपण का बहुत महत्व है. आज के व्यस्त जीवन में तो उसकी उपयोगिता और भी बढ़ गई है. समयाभाव के कारण प्रत्येक मनुष्य अपने काम को कम से कम समय में कर लेना चाहता है. सच कहे तो किसी भी कुशल वक्ता, सम्पादक, संवाददाता, लेखक,वकील,सरकारी अधिकारी आदि का काम इसके बिना नहीं चलता. व्याहवारिक दृष्टी से सभी को इस की आवश्यकता पड़ती है. आप अपने जीवन को देखे तो पाएंगे की आपका काम भी इसके बिना नहीं चलता. उदाहरण के लिए आप कोई नाटक देखकर लौटे है और आपका मित्र उसकी कहानी आपसे जानने को उत्सुक है,आप संक्षेपीकरण करते हुए तीन घंटे की कथा पंद्रह-बीस मिनिटो में कह देते है. संक्षेपण से श्रम और समय की बचत होती है तथा आवश्यक बातो को कम से कम शब्दों में प्रकट कर दिया जाता है.

2. संक्षेपण के गुण

हम देख चुके है कि जीवन के हर क्षेत्र में संक्षेपण की उपयोगिता है. कई बार हम अपने भावो या विचार को संक्षेप में प्रकट करने की जरूरत महेसुस करते है. हमें लगता है कि हम सार रूप में अपनी बात रख दे तब हमें अपने भावों और विचारों के अनावश्यक अंस को निकाल देना पड़ता है और मुख्य बात पर अपनी दृष्टी केन्द्रित करनी पड़ती है. उस मुख्य बात को हम क्रम बध्ध रूप में रखते है और यह बात भी हमारे मन में रहती है कि मुख्य बात का मूल कथ्य पूरी तरह व्यक्त हो जाय – उसमे से कोई बात छुट न जाय. हम अपनी बात का सरल और शुध्ध भाषा में स्पष्टता के साथ रख देते है कि संक्षिप्तता, क्रमबध्दता,पूर्णता तथा भाषा की सरलता और स्पष्टता संक्षेपण के मुख्य गुण है.

3. संक्षेपण की प्रक्रिया या विधि या प्रविधि

संक्षेपण की प्रकिया या विधि को उदाहरण के साथ दिया जाता है. अपनी बात हम एक वाक्य से शुरू करते है. मान लीजिए कि हमारे सामने यह वाक्य है – **"रमा खाने-पीने के व्यंजन बनाने में प्रतिदिन पांच घंटे का समय व्यतीत करती है."**

यदि आप इस वाक्य को ध्यान से देखे तो पाएंगे की इसमे कुछ फालतू या अनावश्यक शब्द है, जिन्हें बड़ी सरलता से हटाया जा सकता है. "व्यंजन" खाने-पीने के लिए ही होते है, अत: इस वाक्य में प्रयुक्त 'खाने-पीने' को हटाया जा सकता है, क्योंकि इन शब्दों का फालतू या अनावश्यक प्रयोग हुआ है. इसी प्रकार 'घंटे' शब्द के आ जाने से 'समय' शब्द भी अनावश्यक है. कारण यह है कि जो बात 'घंटे' से व्यक्त हो रही है वही 'समय' से भी हो रही है और जब किसी एक ही बात को दुबारा कहा जाता है तो उसे 'पुनारावृत्ति' या पुनरावृति कहते है. संक्षेपण करते समय अनावश्यक और पुनरावृत शब्दों या भावो को हटा दिया जाता है. पुनरावृत्ति में प्रयुक्त दो शब्दों में से केवल एक को रखना ही काफी होता है. अब आप संक्षेपण के द्वारा उपरी लिखित वाक्य को इस प्रकार लिख सकते है— **"रमा व्यंजन बनाने में प्रतिदिन पांच घंटे व्यतीत करती है."** आप देख सकते है कि संक्षेपण से वाक्य सुगठित और सुंदर हो गया है.

अब कुछ ओर लम्बे वाक्य को देखे और उसका संक्षेपण करे – "मैंने तुम्हे खोजने के लिए बीहड़ वन, घने जंगल, पर्वत कंदराए, गिरि अंचल, नगर, ग्राम, देश, परदेश सभी की खाक छानी, सभी जगह तुम्हे खोजा, पर निराशा ही हाथ लगी."

इस वाक्य में जो बात 'सभी जगह' के द्वारा कही गयी है, उसी का वर्णन 'बीहड़ वन , घने जंगल .....' के द्वारा किया गया है. लेखन में भावो को प्रभावपूर्ण बनाने में इस शैली का अपना महत्व है, पर संक्षेपण करते समय इस प्रकार के वर्णात्मक विवरणों या ब्योरों को हटाया जा सकता है. संक्षेपण के इस नियम को ध्यान में रखकर उपरी लिखित वाक्यों को इस प्रकार लिख सकते है—"मैंने तुम्हे सब जगह खोजा, पर निराशा ही हाथ लगी." वास्तव में यह उपरोक्त वाक्य का संक्षेपण है.

कुछ वाक्य उप वाक्यों या वाक्य खंडो के योग से बने होते है. संक्षेपण करते समय इन उप वाक्यों या खंडो को छोड़ कर वाक्य को संक्षिप्त करना पड़ता है. संक्षेपण के विषय में एक अन्य जानने योग्य बात यह है की यह हमेशा परोक्ष कथन में होता है. अर्थात संक्षेपण करते समय अन्य पुरुष का प्रयोग होता है— उत्तम या मध्यम पुरुष का नहीं. इसके अतिरिक्त संवादात्मक कथनों का संक्षेपण करते समय उन्हें परोक्ष कथनों में बदलना पड़ता है. उदाहरण के लिए निम्नलिखित अंस को देखिए –

"स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने एक दिन प्रार्थना करते हुए जगदम्बा से कहा, हे जगन्माता ! मुझ में न विद्या है, न बुद्धि, न किसी शास्त्र का ज्ञान. मै तो तेरी संतानों में परम मूर्ख ही हूँ. अब यही प्रार्थना है की तु कृपा करके सभी धर्मो तथा सभी शास्त्रों का सारा तत्व मुझे समझा दे."

हम देख सकते है कि यह अंस उत्तम पुरुष में है. इस अंस में स्वामी रामकृष्ण परमहंस की विनम्रता और निरभिमानता (अहंकार हीनता) की अभिव्यक्ति हुई है, अत: इस अंस का संक्षेपण आप इन शब्दों में कर सकते है-

"स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने विनम्र और अंहकार रहित शब्दों में जगदम्बा से प्रार्थना की कि वह उसे सब धर्मो और सब शास्त्रों का सार समझा दे."
इस उदाहरण में हम देखते है कि मूल अंस के शब्दों का कम से कम प्रयोग करते हुए अपने शब्दों में संक्षेपण करने का प्रयास किया गया है. संक्षेपणकर्ता को चाहिए की वह अपने शब्दों में संक्षेपण करे और

मूल अंस से केवल उन्ही शब्दों को ले जिन्हें छोड़ना उसके लिए संभव न हो. अबतक हमने वाक्यों के संक्षेपण की प्रक्रिया या विधि देखी है. इस विधि का प्रयोग कर हम किसी भी अनुच्छेद या पेरेग्राफ का संक्षेपण कर सकते है.

इस तरह हम देख सकते है की संक्षेपण का हिंदी भाषा में और हमारे जीवन में कितना महत्व है. आज के गतिपूर्ण जीवन में कम समय में अधिक जाकारी प्राप्त करने में संक्षेपण का महत्वपूर्ण योगदान रहा है.